मेरा पन्ना

प्रमोद, तीसरी

बोली चिड़िया मछली से

चिड़िया रंग बिरंगी
खोल रही है पंख
उड़ती उड़ती जाती
वहाँ हवा के संग
दूर, नदी तक जाकर
कहती वह मछली से -
बोलो, तुम कैसी हो?
मछली ज़रा उछलती
कहती, "मैं अच्छी हूँ।"
जाती फिर पानी में
चिड़िया भी फिर उड़कर
हो जाती है फुर्र।

(यह कविता प्रयाग शुक्ल ने अपनी सात साल की नातिन गौरजा सिद्धार्थ के साथ मिलकर लिखी है।)

परी का सपना

दीदी कहती एक कहानी
थी वह परियों की रानी
उड़ती थी वह आसमान में
सुन्दर सपने को लेकर

उसने सोचा कि चलो
पृथ्वी पर पूरे करने सपने
एक दिन वह उड़ते-उड़ते
आ गई वह पृथ्वी पर

अर्चना कश्यप, छठी, कानपुर

बाँधवगढ़ ट्रिप

मैं इस गर्मी की छुट्टियों में बाँधवगढ़ अपनी माँ के साथ गई थी। हम कटनी तक ट्रेन से गए और फिर तालाब तक जीप से गए। हम एक ग्रुप के साथ गए थे जिस का नाम "निसर्ग" था। हम कुम-कुम होटल में रूके। मैंने पाँच दिन में चार बाघ बहुत करीब से देखे। बाँधवगढ़ के जंगल में ज़्यादा पक्षी थे और कम प्राणी थे। हम सब जंगल में जाने के लिए सुबह 3:30 बजे उठते थे। सुबह बहुत ठण्डी हवा होती थी। मैं सब गलत रंग के कपड़े ले गई थी। मैंने गुलाबी, लाल और काले रंग के कपड़े पहने थे। हमारे होटल में रात को बहुत प्रकार के कीड़े आते थे। हमारे कमरे में बहुत मकड़ी थी। रात को जंगल से बहुत आवाज़ें आती थीं। हमें डर लगता था इस कारण हम बच्चे चिपक-चिपककर सोते थे। मैंने नाचते हुए मोर भी देखे। मेरी माँ ने लड़ते हुए बाघ और बाघ के 3 बच्चे देखे। सबसे आखरी में मैंने एक बन्दर को देखा जो अपने माँ की पीठ पर चढ़ने की कोशिश कर रहा था। उसकी माँ जब दूसरे पेड़ पर कूदी तो वो गिर गया। हम सब फिर संग्रहालय गए। वहाँ बाघ के बारे में बहुत जानकारी लिखी थी। वहाँ पर एक दिन बहुत बारिश हुई थी। हम सब भीगे थे। मुझे वहाँ बहुत मज़ा आया। मैं अगली बार कान्हा जाने वाली हूँ।

श्रावणी शेंड्ये, चौथी, भोपाल, म.प्र.

राजेश बिन्द, सातवीं, मुम्बई

कोमल पारमा, पाँचवीं, उज्जैन, म.प्र.

अमृता यादव, चौथी, भोपाल